

तत्सम एवं तद्भव शब्दों की पहचान के विशेष नियम:-

नियम - ① क्ष, त्र, ज्ञ और श्र युक्त शब्द तत्सम होते हैं. तद्भव होने पर  
खँ, तँ, जँ, मौर सँ हो जाते हैं -

जैसे - क्षेत्र - खेत, अक्षत - अखत, नक्षत्र - नखत,  
अक्षय - अखा, अक्षि - आँख, कुक्षि - कोख, पृक्ष - विरख,  
क्षार - खार, क्षीर - खीर, परीक्षा - परख, मक्षिका - मक्खी,  
रक्षा - राखी, शिक्षा - सीख, भिक्षा - भीख, साक्षी - साखी.

पुत्र-पुल, चैत्र-चैल, चित्रक-चीला, पत्र-पला/पन्ना

त्रीणि-तीन, मित्र-मील, रात्रि-रात, सूत्र-सूत

धरित्री-धरती, त्रयोदश-तेरह, गात्र-गात.

ज्ञानी-जानी, अज्ञान-अजान, ज्ञानवान-जानकार.

अश्रु-आँसू, श्रम-सेवा, श्रमिक-सेवक, शृंगार-सियार.

शृंगार-सिंगार, शृंग-सींग, श्रावण-सावन, श्रमश्रु-मुँछ, श्रवश्रु-सास.



नियम-② अनुस्वार (२) युक्त शब्द न्त्यम होते हैं और

-चन्द्रबिन्दु (२) युक्त शब्द नदभव होते हैं-

जैसे - चंद्र- चाँद, ढंडी- हॉंडी, अंक- आँक, अंगुष्ठ- अँगूठा,  
 दंत- दाँत, पंच- पाँच, कुंचा- काँच, जंघा- जाँघ,  
 चंचु- चाँच, शूँड- शूँड़, चंद्रिका- चाँदनी, कंक- काँरा,  
 अंगुलि- अँगुली/मँगुरी, मंधकार- मँधेरा.

नियम-③ 'य' युल शब्द तत्सम होते हैं, तद्भव होने पर  
 'य' का 'ज' हो जाता है-

जैसे- यम-जम, यमुना-जमुना, युवती-जुवती,  
 यशोदा-जसोदा, यौवन-जौवन, धैर्य-धीरज, कार्य-काज,  
 यश-जस, योगी-जोगी, यजमान-जजमान, सूर्य-सूरज.

नियम-④ 'ण' युक्त शब्द लस्यम होते हैं, लइभवे होने पर 'ण कान' हो जाता है-

जैसे- कर्ण-कान, पर्ण-पान, दूर्ण-दूरन, दृणा-घिन,  
 तृण-तिनका, कोण-कोना, श्रावण-सावन, अर्पण-अरपन,



**नियम-⑤** यदि 'र' वर्ण ऊपर लगा हो और 'ऋ' युक्त शब्द  
 तत्सम होते हैं, तद्भव होने पर या तो इनका शेष हो जाता है अर्थात्  
 'र' हो जाता है -

जैसे- कर्पूर-कपूर, शर्करा-शक्कर, कर्म-काम,  
 चर्म-चाम/चमड़ी, अकार्य-अकाज, आश्चर्य-अचरज,  
 अर्क-आक/अरक, गर्दभ-गधा, चतुर्थ-चौथा, कार्तिक-कातिक,  
 मृत-मरा, ऋक्ष-रीख, घृत-घी, हृदय-दीय, पितृ-पितर

**नियम-⑥** यदि ङ और ढ के नीचे बिन्दी नहीं लगी हो तो वे शब्द तत्सम होते हैं और यदि ङ और ढ के नीचे बिन्दी लगी हो तो वे शब्द ल्हभव होते हैं तथा तत्सम के ए का ल्हभव में 'ड़' हो जाते हैं।

जैसे- घर-घड़ा, घरिका-घड़ी, घोरक-घोड़ा,  
 कर्पर-कपड़ा, पर्पर-पापड़, मर्कली-मकड़ी,  
 कपार-किवाड़, कहु-कड़वा



**नियम - (५)** यदि श और स शब्द के प्रारम्भ में आ जायें तो वे शब्द लुप्त हो जाते हैं, यह भव होने पर आ तो इनका लोप हो जाता है अर्थात् 'स' हो जाता है -

जैसे - श्यामी - सामी, स्वप्न - सपना, श्वसुर - ससुर,  
 स्वजन - सजन, श्मसान - मसान, स्थान - थान,  
 स्थल - थल, स्थिर - थिर, स्तन - थन